International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-4 July-August-2023 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

# स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

➢ पूनम रानी, शोधकर्ती, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
➢ डॉ0 विकेश कामरा, प्रोफेसर एवं शोध निर्देशक, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

**सार–**

आधुनिक युग में सारा विश्व यन्त्रवाद की निष्प्राण आधुनिकता से तृप्त है इसलिए आवश्यक है कि हम अपनी आध्यात्म प्रधान शैली और मौलिक चिन्तन धारा को पुनः प्रभावशाली बनाये एवं आज की शैक्षिक समस्याओं जैस अनुशासनहीनता, छात्र असन्तोष, हड़ताले और शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्धों में व्याप्त भ्रष्टाचार आदि सभी समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास करें। इसके लिए हमें दो महान भारतीय दार्शनिक स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों पर बन देना चाहिए जिससे समाज में आयी विकृतियों को दूर करने का प्रयास किया जा सके। यदि हम इन दोनों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करे तो इन दोनों के विचारों में बहुत सी समानतायें और असमानतायें होने पर भी यह निर्विवाद रूप से स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान काल मं इन दोनां महापुरूषों के शैक्षणिक विचारों पर बल दिया जाना आवश्यक है।

**प्रस्तावना–**

स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार, "शिक्षा के बिना मनुष्य केवल नाम मात्र का मनुष्य है। शिक्षा प्राप्त करना, सद्गुणों का विकास, ईर्ष्या से मुक्त होना तथा धार्मिकता का उत्थान करते हुए व्यक्तियां के कल्याण का उपदेश देना मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ अत्यन्त व्यापक है। उन्होंने शिक्षा का अर्थ, आन्तरिक शुद्धि, शरीर निर्माण, इन्द्रिय साधना और बौद्धिक शक्तियों का विकास बताया। उनका विश्वास था कि शिक्षा द्वारा विशुद्ध चरित्र का निर्माण किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से सत्य आचरण करना, सद्गुणों का विकास करना ही शिक्षा है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति सत्य और असत्य का ज्ञान प्राप्त करता ह। सत्य को बढ़ान तथा असत्य को नष्ट करने का प्रयास करता है। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा सबसे महान तथा मूल्यवान गुण है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति अपने अन्दर सद्गुणों का विकास करके अपनी और दूसरों के जीवन को सुखी बना सकता है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का अर्थ केवल उन सूचनाओं से नहीं है, जो बालकों के मस्तिष्क में बलपूर्वक ठूँसी जाती है। उनके अनुसार–"शिक्षा का अर्थ, सूचनाओं से नहीं होता, नहीं तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ सन्त होते तथा विश्व कोष महान ऋषि बन जाते स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा मनुष्य की अर्न्तनिहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"

दोनों भारतीय दार्शनिकों के द्वारा अभिव्यक्त शिक्षा के अर्थ को मानवतावादी शिक्षा के संदर्भ में देखने से स्पष्ट होता है कि दोनों ने शिक्षा के वास्तविक अर्थ को मानवतावादी शिक्षा के सन्दर्भ में ही अभिव्यक्त किया है।

**शिक्षा का उद्देश्य**

स्वामी दयानन्द सरस्वती शिक्षा के उद्देश्यों के द्वारा एक ओर तो मनुष्य को भौतिक जीवन के लिए तैयार करना चाहते थे और दूसरी ओर उसे मोक्ष की प्राप्ति के लिए अग्रसर करना चाहते थे। उन्होंने अपनी शिक्षा के उद्देश्यों के अन्तर्गत शारीरिक विकास, मानसिक विकास, नैतिक विकास, चरित्र का विकास, सामाजिक विकास, आत्मानुभूति, वैदिक धर्म तथा संस्कृति का पुनरूत्थान तथा सद्गुणों का विकास करने पर बल दिया।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य आत्मानुभूति है। स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के उद्देश्यों के अन्तर्गत बालक के शारीरिक विकास, मानसिक विकास, चरित्र का विकास, धार्मिक विकास, अन्तनिर्हित पूर्णता की अभिव्यक्ति, सच्चे मनुष्य का निर्माण करना, राष्ट्रीयता का विकास करना, विश्व बन्धुत्व, व्यावसायिक क्षमता का विकास आदि उद्देश्यों के साथ–साथ आत्म विश्वास, श्रृद्धा एवं आत्म त्याग की भावना पर भी बल दिया।

**पाठ्यक्रम**

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा के पाठ्यक्रम को प्राचीन आश्रम व्यवस्था के आधार पर निर्धारित किया। इसलिए इन्होंने बच्चों को 25 वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य का पालन करने एवं अध्ययन करने पर बल दिया। इनके अनुसार बच्चे की शिक्षा गर्भ से ही प्रारम्भ कर देनी चाहिए इन्होंने प्रत्येक स्तर पर बच्चों के लिए अलग–अलग पाठ्यक्रम निर्धारित किये। इन्होंने पाठ्यक्रम में बालकों को शुद्ध आचरण की शिक्षा पर बल दिया। स्वामी जी ने 15 वर्ष से 21 वर्ष तक बालकों को धार्मिक ग्रन्थ, षट दर्शन, उपनिषद और वेदों का अध्ययन करना चाहिए इसके बाद भौतिक दृष्टि से उपयोगी विषयों, वैध कानून, गायन, शिल्पकला, विज्ञान, भूगोल और खगोल आदि को स्थान दिया है।

स्वामी विवेकानन्द ने पाठ्यक्र के अन्तर्गत उन सभी विषयों को सम्मिलित किया है जिनके माध्यम से भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति होती है। लौकिक उन्नति के लिए उन्हांने निम्नलिखित विषयों को बताया है, भाषा, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, राजनीति, अर्थशास्त्र, गणित, कला, कृषि प्राविधिक विष्ज्ञय, व्यावसायिक विषम व्यायाम, खेल कूद, समाज सेवा आदि आध्यात्मिक उन्नति के लिए स्वामी जी ने वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, धर्म, उपदेश, साधु संगति, भजन कीर्तन आदि विषय रखे हैं।

वर्तमान समय में इन दोनों ही दार्शनिकों के विचारों के अनुरूप पाठ्यक्रम बनाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं जिससे मानवतावादी शिक्षा का प्रसार हो सके। अतः दोनों दार्शनिकों के पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचारों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इन दोनों ने मानवतावाद के अनुरूप ही पाठ्यक्रम में सभी विषय सम्मिलित करने पर बल दिया है।

**शिक्षण विधि**

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी शिक्षण विधि और अध्ययन विधि में कोई अन्तर नहीं मानते थे। उन्होंने प्रायः वैदिक विधियों का ही समर्थन किया है। शिक्षण के लिए उन्होंने कई विधियों पर जोर दिया जैसे वाद–विवाद विधि, व्याख्यान विधि, उपदेश विधि, प्रश्नोत्तर विधि तथा स्वाध्याय विधि, प्रत्यक्षानुभव विधि, तर्क विधि और व्यावहारिक विधि पर बल दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने पढ़ने–पढ़ाने के लिए चित्त की एकाग्रता पर बल दिया।

स्वामी विवेकानन्द अपने समय की शिक्षण विधियों के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने भारत की प्राचीन आध्यात्मिक शिक्षण पद्धति को अपनाने पर बल दिया। वे ऐसी शिक्षण विधियों पर बल देते थे जिससे मनुष्य को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान प्राप्त हो। स्वामी जी ने भौतिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष, अनुकरण, व्याख्यान, निर्देशन, विचार–विमर्श और प्रयोग विधियों का समर्थन किया है और आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए स्वाध्याय विधि, मनन ध्यान और योग की विधियों का समर्थन किया है।

**शिक्षक**

स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार शिक्षक को गुणों की खान, सत्य आचरण करने वाला, और सत्य ज्ञान का दृष्टा होना चाहिए। ऐसा होने पर ही वह छात्रों का सच्चा मार्ग दर्शन कर सकेगा। स्वामी जी ने छात्रों के साथ–साथ शिक्षक को भी ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करने का सुझाव दिया। उनके अनुसार शिक्षक का छात्रों से प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षण व्यवस्था में शिक्षक को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। उनके अनुसार बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास गुरू के बिना सम्भव नहीं है। स्वामी जी के अनुसार–"शिक्षक एक दार्शनिक, मित्र तथा पथ प्रदर्शक है जो बालक को अपने ढंग से अग्रसर होने के लिए सहायता प्रदान करता है।

**बालक**

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने छात्र को शिक्षक के अनुशासन में रहकर संयमित, नियमित एवं ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत करना चाहिए। उनके अनुसार छात्र को गुरू के चरणों में बैठकर विद्या का अध्ययन करना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार छात्र किसी शिक्षक से तभी सीख सकता है तब वह सीखने का जिज्ञासु हा, सत्य एवं शुद्ध आचरण करने वाला हो और एकाग्र चित्त से अध्ययन की ओर अग्रसर हो।

स्वामी विवेकानन्द जी ने बालक को शिक्षा का केन्द्र बिन्दु माना है तथा बताया कि बालक लौकिक तथा आध्यात्मिक सभी प्रकार के ज्ञान का भण्डार होता है और वह पेड़ पौधों की भांति स्वयं ही स्वाभाविक रूप से विकसित होता है। स्वामी विवेकानन्द ने बताया कि बालक मन, वचन और कर्म से सत्य का पालन करने वाला हो, पूर्ण ब्रह्मचारी हो, उसके मन में गुरू के प्रति अपार श्रृद्धा, आहर और अटूट विश्वास हो, जिज्ञासु हो और उसमें एकाग्रता एवं लगन के साथ परिश्रम करने की इच्छा शक्ति हो।

**अनुशासन**

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के अनुसार शिक्षा एक साधना है जोकि बिना अनुशासन के प्राप्त नहीं की जा सकती। अतः वे शिक्षा पद्धति में कठोर अनुशासन का समर्थन करते हैं उनका कहना है कि बालकों के लिए व्यर्थ का लाड़–प्यार विष क समान है और कठोर दण्ड अमृत के समान है परन्तु साथ ही उनका यह भी कहना था कि दण्ड ईर्ष्या एवं द्वेष रहित होना चाहिए। उनके अनुसार बालकों को अनुशासन सिखाने के लिए शिक्षक तथा माता–पिता उनके सामने अपने आदर्श आचरण द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करें तभी बालक अनुशासन का महत्व समझेंगे। साथ ही शिक्षक उनके साथ प्रेम सहानुभूति और दया का व्यवहार करें।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा व्यवस्था मं अनुशासन का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वामी जी शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को ही अनुशासित देखना चाहते हैं। अनुशासन से उनका तात्पर्य केवल बाह्य व्यवस्था से नहीं वरन् वे संयम और आत्म नियन्त्रण पर बल देते हं। उनके अनुसार विद्यार्थी को स्व अनुशासन सीखना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार विद्यार्थी को किसी प्रकार का शारीरिक दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए और न ही उन पर अनुचित दबाव डालना चाहिए। इससे उनके विकास के अवसर अवरूद्ध हो जाते हैं इसलिए बालक को पर्याप्त स्वतन्त्रता दी जाये।

**आत्मानुभूति या परमानुभूति**

स्वामी दयानन्द जी के अनुसार आत्मानुभूति या परमानुभूति से तात्पर्य पूर्णत्व की प्राप्ति या आत्मा के पूर्ण विकास से है। स्वामी दयानन्द के अनुसार आत्मानुभूति का अर्थ अपनी आत्मा को पहचानना। आत्मानुभूति के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए स्वामी जी बालक एवं बालिकाओं को अनिवार्य शिक्षा के द्वारा व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर बल देते हैं जिससे प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आत्मा का ज्ञान हो सके।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार प्रत्येक मनुष्य आत्माधारी हैं और आत्मा का अन्तिम लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति या अनुभूति या आत्मज्ञान या मुक्ति या मोक्ष है इसलिए मनुष्य जीवन का लक्ष्य भी यही होना चाहिए।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ज्ञान योग, कर्म योग और भक्ति योग आवश्यक है। उनके अनुसार योग सभी प्रकार के ज्ञान की सर्वोत्तम विधि है। आत्मानुभूति के लिए उन्होंने बुद्धि को तीव्र करने की अपेक्षा हृदय को पवित्र करने पर बल दिया है। स्वामी जी ने मानव को ईश्वर का प्रतिरूप माना है और कहा ईश्वर को ज्ञानेन्द्रियां द्वारा कभी ग्रहण नहीं किया जा सकता। अभी तक न तो किसी ने ईश्वर को आंखों से देखा है और न देख सकेगा न किसी को ईश्वर की प्राप्ति अपनी चेतना में होती है। ईश्वर की प्राप्ति के लिए स्वामी जी के अनुसार मनुष्य को अपनी अन्तःरूप आत्मा के अधिकाधिक निकट जाना पड़ेगा और जितना तुम आगे बढ़ोगे उतने ही तुम ईश्वर के अधिकाधिक समीप पहुँचोगे। परमेश्वर के अस्तित्व का प्रमाण है साक्षात्कार या आत्मानुभूति।

**शिक्षा में योगदान**

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति पर बल दिया। आज जब भौतिकवाद अपनी चरम सीमा पर है मनुष्य अपनी शान्ति खो बैठा है और उसका ध्यान सदैव भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति में लगा रहता है।

आज की शिक्षा प्रणाली भौतिकवादी दृष्टिकोण को अधिक महत्व दे रही है। ऐसी स्थिति में स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार बतायी गयी शिक्षा–प्रणाली को अपना कर इन समस्याओं को हल किया जा सकता है। स्वामी जी ने एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा योजना का निर्माण किया जो भारतीय संस्कृति और आदर्शों के साथ–साथ जीन की व्यापकता और पूर्णता पर आधारित थी। आधुनिक काल में ऐसी ही शिक्षा–प्रणाली की आवश्यकता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा के क्षेत्र में मातृ भाषा को काफी महत्व दिया, उन्होंने मातृभाषा के साथ–साथ अन्य भाषाओं को भी सीखने पर बल दिया। स्वामी जी के लिए अनिवार्य सभी वर्णों और जातियों का भेदभाव मिटाकर सभी के लिए अनिवार्य शिक्षा की बात कही, उन्होंने स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया तथा उन्हें पुरूषों के समान अधिकार एवं स्वतन्त्रता दिलाने का समर्थन किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा में धर्म को महत्वपूर्ण स्थान दिया। इन्होंने कहा कि शिक्षा का आधार धर्म है जिससे व्यक्ति को अपनी आन्तरिक शक्तियों को विकसित करने का अवसर मिल सकें। इसके अतिरिक्त स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सभी वर्णों और जातियों का भेद–भाव मिटाकर सभी के लिए निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का समर्थन किया, आज राज्य का यह प्रमुख कर्त्तव्य माना जाता है कि जन साधारण को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा दी जाए। इसके साथ–साथ स्वामी जी ने व्यावसायिक शिक्षा का भी समर्थन किया जिससे व्यक्ति आत्मनिर्भर बनकर राष्ट्र के विकास में सहयोग दे सकें।

स्वामी विवेकानन्द ने आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जब तक हम भौतिक दृष्टि से सुखी नहीं होते तब तक ज्ञान, भक्ति सब कल्पना की वस्तु हैं। स्वामी जी के पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में व्यक्त किये गये विचार भी अत्यन्त व्यापक हैं। इन्होंने अपने पाठ्यक्रम आध्यात्मिक तथा भौतिक उन्नति के लिए सभी विषयों को महत्व दिया। स्वामी जी ने पाठ्यक्रम के विषयों में बालकों के लिए प्राविधिक और औद्योगिक शिक्षा की व्यवस्था करने पर बल दिया है। स्वामी जी शारीरिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्थान देते हैं जिससे बालकों को बलिष्ठ और स्वस्थ बनाया जा सके। स्वामी विवेकानन्द सर्वोत्तम भाषा संस्कृत को मानते हैं। उनका विश्वास था कि संस्कृत के द्वारा ही प्राचीन भारतीय गौरव के विषय में जानकारी प्राप्त की जा सकती है इसलिए हमारी शिक्षा में संस्कृत को स्थान मिलना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द के शिक्षक और शिक्षार्थी के सम्बन्ध में दिये गये विचार भी अत्यन्त व्यापक हैं। उन्होंने दोनों के लिए ब्रह्मचर्य पर बल दिया। स्वामी जी ने जन साधारण की शिक्षा तथा स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में विचार कर देश की अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है। स्वामी विवेकानन्द ने मातृ भाषा के साथ–साथ अंग्रेजी भाषा तथा विज्ञान की शिक्षा पर बल दिया जिससे राष्ट्र का विकास हो सके।

**निष्कर्ष–**

उपरोक्त दोनों दार्शनिकों के अनुसार व्यक्त किये गये विचारों को शिक्षा के सन्दर्भ में देखने पर विदित होता है कि इन दोनों ने अपने विचार शिक्षा में योगदान के अनुसार ही व्यक्त किये हैं। अतः उपरोक्त दोनों दार्शनिकों के शैक्षिक विचार आज के युग में सर्वाधिक योगदान देते हैं।

**सहायक ग्रन्थ सूची**


- मित्तल, एम0एल0 : "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", इन्टरनैशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ–250001, 2006
- माथुर, एस0 एस0 : "शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–282002, 2010
- ऑबेराय, सुरेश चन्द्र : "शिक्षा तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्धन", आर0 लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलेज ,मेरठ–250001, 2005
- पाठक, पी0डी0 व जी0एस0डी0त्यागी : "शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–282002, 2009
- पाण्डेय आर0 एस0 : "भारतीय शिक्षा के विभिन्न आयाम" विनाद पुस्तक मन्दिर, आगरा–282002, 2004
- पचौरी गिरीशः : प्रथम संस्करण, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक" इन्टरनैशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ–250001, 2006
- राठौर, कुसुम लता : प्रथम संस्करण, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ–250001, 2009
- शर्मा, आर0 ए0 : "पाठ्यक्रम विकास एवं अनुदेशन", आर0 लाल बुक डिपो निकट राजकीय इण्टर कॉलेज मेरठ–250001, 2008
- शर्मा, आर0 ए0 : "तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, मूल्यमीमांसा एवं शिक्षा", सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज,मेरठ–250001, 2008
- शर्मा रामनाथ व शर्मा राजेन्द्र कुमारः द्वितीय संस्करण, "शिक्षा दर्शन", एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटरर्स, बी–2, विशाल एन्क्लेव,नई दिल्ली, 2007
- शर्मा, आर0ए0 : "शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ–250001, 2012
- तिवारी, केदारनाथ : पंचम् संस्करण, "तत्व मीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा", मोतीलाल बनारसीदास, 41,यू0ए0बंग्ला रोड,जवाहरनगर, दिल्ली–110077, 2014
- डा0अर्जुन मिश्र दर्शन की मूल धाराऍं, प्रकाशक, मध्यपदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1989